प्रातः क्लास 14-7-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं कि एक तरफ है भक्ति, और दूसरी तरफ है ज्ञान। भक्ति तो अथाह है। और अथाह भक्ति सिखलाने वाले हैं। शास्त्र भी सिखलाते हैं, मनुष्य भी सिखलाते हैं। यहां न कोई शास्त्र है, न कोई मनुष्य है। यह सिखलाने वाला है ही एक रूहानी बाप जो आत्माओं को बैठ समझाते हैं। आत्मा ही धारण करती है। परमपिता में भी यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उसमें नालेज है। इसलिए उनको भी स्वदर्शनचक्रधारी कह सकते हैं। बच्चों को भी स्वदर्शनचक्रधारी बना रहे हैं। बाबा भी ब्रह्मा के तन में इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जाता है। हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण हैं यह भी जानते हो ब्राह्मण से फिर देवता बनते हैं। अभी बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं। इसमें कोई हठयोग आद की बात नहीं है। वह लोग हठयोग आद से ट्रान्स में जाते हैं। यहां वह बात है नहीं। ट्रान्स कोई काम की नहीं। कब भी किसको ऐसे नहीं कहना होता है कि हम ट्रान्स में जाते हैं। यह कोई बड़ाई नहीं, घाटा है। ट्रान्स की बड़ाई कब है नहीं। कुछ भी नहीं है। ट्रान्स तो एक पाई पैसे का खेल है। कब भी ऐसे किसको नहीं कहना है हम भी ट्रान्स में जाते हैं। क्योंकि आजकल विलायत आद में भी जहां-तहां ढेर के ढेर ट्रान्स में जाते हैं। ट्रान्स में जाने से न कोई फायदा है उनको, न फायदा है तुमको। बाबा ने समझा दिया है ट्रान्स में न याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रान्स वाला कब कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा। न कोई पाप भस्म होंगे। ट्रान्स का महत्व कुछ भी है नहीं। ट्रान्स दिखलाने लिए कोई कहना भी भूल है। बाबा के पास समाचार तो आते हैं ना। कोई ने कहा हमने सुना है आप ट्रान्स में जाते हो, वह दिखाओ। तो उनको ले गये। बाबा कहते हैं ट्रान्स तो बिल्कुल बर्थ नाटअपेनी है। बच्चे भोग लगाते हैं उनको कोई ट्रान्स नहीं कहा जाता। ट्रान्स भक्ति मार्ग हठयोग आद में है। ट्रान्स का महत्व कुछ भी है नहीं। न दिखाने की दरकार नहीं है। बोलो यहां ट्रान्स है नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं मामेकं याद करो। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। बस। याद को ट्रान्स नहीं कहा जाता। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। ट्रान्स में विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाबा के पास समाचार आते हैं। हठयोगियों को बुलाकर ट्रान्स दिखाते हैं। बाबा सावधान करते हैं, वारनिंग देते हैं कब भी कोई सन्यास मठ केबड़ों को, क्योंकि मठ-पंथ तो बहुत है ना, कब भी किसको निमंत्रण देने की दरकार नहीं है। क्योंकि वह अपने धर्म के ही नहीं हैं। उनको इस समय कुछ भी फायदा होने का नहीं है। वह इस समय बहुत मगरूर हैं। इन सन्यासियों आद को ज्ञान तब मिलना है जब विनाश का समय होता है। तुम जानते हो यह अपने धर्म के तो है नहीं। भल निमंत्रण देते रहो परन्तु कोई आशा मत रखो। यह ज्ञान कल्ट में जल्दी नहीं आवेंगे। जब विनाश सामने देखेंगे तब आवेंगे। समझेंगे अभी तो मौत आया कि आया। फिर तुम जो कहेंगे वह मानेंगे। तुम कहते रहते हो 8वर्ष में विनाश आया कि आया। जब नज़दीक देखेंगे तब मानेंगे। मौत आना है। तुम तो बहुत समय से कहते आते हो। अभी तो समझते हैं इन्हों के यह गपोड़े हैं। जैसे तुम भक्ति को गपोड़ा समझते हो वैसे वह तुम्हारे ज्ञान को भी गपोड़ा समझते हैं। तुम्हारा झाड़ धीरे2 बढ़ना है। सन्यासी कोई इस आने का नहीं है। उनको भी सिर्फ यह कहना है कि बाप को याद करो। यह भी बाप ने समझाया है तुमको आंखें बन्द नहीं करनी है। आंख आंख में मिलाना है। आंखें बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे। हम आत्मा हैं। परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। देखने में तो नहीं आता है। यह ज्ञान बुधि में है। ट्रान्स को कोई ज्ञान नहीं कहा जाता। तुम बच्चे बैठे हो समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं इस शरीर के आधार से। ध्यान आद की कोई बात ही नहीं। ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यह भोग आद कि= की ड्रामा में नूंध है। सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हैं। जैसे सर्वेन्ट लोग बड़े आदमी को खिलाते हैं, तुम भी सर्वेन्ट हो। देवताओं को भोग लगाने जाते हो। वह है फरिश्ते। वहां ममा बाबा को देखते हैं। वह भी एमआबजेक्ट है। इनको

इनको ऐसा फरिश्ता बनना है। बाकी ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं। जैसे यहां शिव बाबा तुमको पढ़ाते हैं वैसे वहां भी शिव बाबा उन द्वारा कुछ समझावेंगे। सूक्ष्मवतन में क्या होता है यह सिर्फ जानना होता है। बाकी ट्रान्स आद की कोई महत्व नहीं। कोई को ट्रान्स आद दिखाना यह बचपन, बेबीपना है। बाबा सभी को सावधान करते हैं ट्रान्स में मत जाओ। यह तो पढ़ाई है। कल्प2 बाप आकर पढ़ाते हैं। अभी है संगम युग। तुमको जरूर ट्रान्सफर होना है। ड्रामा के पलेन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो। पार्ट की महिमा है। बाप आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। ड्रामा अनुसार तुमको बाप से एक बार पढ़ कर देवता जरूर बनना है। इसमें बच्चों को तो खुशी होती है। हम बाप को भी और रचना के आदि, मध्य, अन्त को भी जान गये हैं। बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए। और तुम पढ़ते ही हो नई दुनिया के लिए। वहां है ही देवी-देवताओं का राज्य। तो जरूर पुरुषोत्तम युग पर पढ़ना होता है। तुम इस दुःख से छूट कर सुख में जाते हो। यहां तो तमोप्रधान होने कारण तुम बिमार रोगी आद होते हो। यह सभी रोग मिट जानी है। मुख्य है ही पढ़ाई। उन से ट्रान्स आद का कनेक्शन नहीं। यह बड़ी बात नहीं। बहुत जगह ऐसे ध्यान में चले जाते हैं फिर भभा आती है बाबा आता है। यह कुछ भी है नहीं। बाप तो एक ही बात समझाते हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। तुम जो आधा कल्प देहअभिमानी बन पड़े हो अभी देहीअभिमानी बन बाप को याद करो तो वि-कर्म विनाश हो। इसको याद की यात्रा कहा जाता। योग कहने से यात्रा सिध नहीं होता है। तुम आत्माओं को यहां से जाना है। बहुत सतोप्रधान बनकर जाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम ट्रायल करते हो। उन्हों का जो योग है उसमें ट्रायल की बात नहीं। हठयोगी तो ढेर हैं। वह है ही हठ योग। यहां है बाप को याद करना। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा समझो। ऐसे और कोई कब नहीं समझावेंगे। ट्रान्स आद की बात जो दुनिया में है वह यहां नहीं। और ही तुम पर हंसी उड़ावेंगे। क्योंकि वह इस याद की यात्रा को जानते ही नहीं हैं। भोग लगाकर आते हैं यह ड्रामा में नूंध है। इनका महत्व कुछ नवधा भक्ति में भी ध्यान में जाते हैं, जिसकी भक्ति करते हैं वह चित्र आ जाते हैं। कोई बड़ी बात नहीं। इससे फायदा कुछ नहीं। यह तो पढ़ाई है। बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है। कोई को बुलाना न है। बाबा कहते हैं तुम म्युजियम खोलो। आपे ही तुम्हारे पास आवेंगे। बुलाने की तकलीफ नहीं होगा। कहेंगे यह ज्ञान तो बहुत अच्छा है। कबसुना नहीं है। इसमें तो कैरेक्टर्स सुधरते हैं। मुख्य है ही पवित्रता। जिस पर ही हंगामे होते हैं। बहुत प्रोफेसर्स भी होते हैं। तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जानी है इस दुनिया में होते हुये इनको देखते नहीं हैं। आत्मा तो चली जावेंगी अपने शान्तिधाम। घर गृहस्थ में रहते हुये खाते, पीते तुम्हारी बुधि दस तरफ हो। जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सभी की बुधि नये मकान तरफ चली जाती है। अभी नई दुनिया(स्वर्ग) बन रही है। बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं। हम स्वर्गवासी थे फिर चक्र लगाया है। अभी चक्र पूरा हुआ। अभी तुमको स्वर्ग में जाना है। तो उसके लिए पावन भी जरूर बनना है। याद की यात्रा से पावन बनना है। याद में ही विघ्न पड़ती है। इसमें ही तुम्हारी लड़ाई है। पढ़ाई में लड़ाई की बात नहीं। पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। 84 के चक्र का नालेज तो बहुत इज़ी है। बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो इसमें है मेहनत। यह भूलने से विकर्म बन जाते हैं।

बाप कहते हैं यह याद की यात्रा भूलो मत। कम से कम आठ घंटा तो जरूर याद करो। शरीर निर्वाह लिए कर्म भी करना है। नींद भी करनी है। सहज मार्ग है ना। अगर कहीं नींद न करो। यह तो हठयोग हो गया। हठयोगी तो बहुत ही हैं। बाप कहते हैं उस तरफ कुछ भी न देखो। इससे कुछ फायदा नहीं। कितने हठयोग सिखलाते हैं। यह सभी है मनुष्य मत। तुम आत्माएं हो परमपिता परमात्मा के मत पर। आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है ना। डा० बनते हैं फलाना बनते हैं। परन्तु मनुष्य देहअभिमानी बन पड़े हैं मैं फलाना हूं। अभी तुम्हारी बुधि में है हम आत्मा हैं। बाप भी आत्मा है। इस समय तुम आत्माओं की कोई आत्मा नहीं पढ़ती

लेकिन परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। इसलिए गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे ... कल्प2 मिलते हैं। बाकी जो भी सारी दुनिया है वह सभी देह अभिमान में आकर, देह समझ कर ही पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूं। जज, बैरिस्टर आद भी आत्मा बनती है। तुमको पढ़ाने वाला है परमात्मा। बाप कहते हैं तुम आत्मा सतोप्रधान पवित्र थे। फिर तुम पार्ट बजाते2 सभी पतित बन गये हो। अभी चिल्लाते हो बाबा आकर पावन बनाओ। बाप तो है ही पावन। यह बात कोई की बुधि में नहीं है। जब सुने तब धारणा हो। तुम बच्चों को धारणा होती है जो तुम देवता बनते हो। और कोई की बुधि में बैठेगा नहीं। क्योंकि यह है नई बात। यह है ज्ञान। वह है सारी भक्ति। तुमने भी भक्ति की है। तो तुम घड़ी2 देहअभिमानी बन जाते हो। अभी बाप कहते हैं बच्चे आत्मा अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझो। हम आत्माओं को बाप शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। घड़ी2 यह याद रखो। यह एक ही समय है जब कि आत्माओं का बाप परम पिता परमात्मा पढ़ाते हैं। बाकी सारे ड्रामा में कब पार्ट है नहीं। सिवाय इस संगम युग के। इसलिए बाप बार2 फिर भी कहते हैं मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। यह बड़ी ऊंची यात्रा है। चढ़े तो चखो बैकुण्ठ रस ... विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो आवेंगे ना। परन्तु बहुत कम पद। यह राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें कम पद वाले भी चाहिए ना। सभी थोड़ेई ज्ञान में उछलते हैं। फिर तो बाबा को बहुत बच्चियां मिलनी चाहिए। अगर मिलती भी है तो थोड़े टाईम के लिए। वास्तव में तुम फिमेल तो नौकरी के बन्धन से मुक्त हो। मेल्स को नौकरी कर बच्चों की पालना करनी है। यह अभी रिवाज़ हुआ है। जो फिमेल्स भी नौकरी करती है। तुम बच्चों को तो फर्सत है। आठ घंटा नौकरी पुरुषों को करनी है। तुम फ्री हो। इसलिए बन्देमातरम गाया हुआ है। जगदम्बा का कितना भारी मेला लगता है। क्योंकि बहुत सर्विस की है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह बड़ा राजा बनते हैं। दिलवाला मंदिर में तुम्हारा ही यादगार है। तुम बच्चों को तो बहुत टाईम निकालना है 'रोटी पकाई खलास। वह भी शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए। जो किसको खिलावें तो उनका भी हृदय शुद्ध हो जाये। ऐसे बहुत थोड़े हैं। जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा। अपने से पूछो हम शिव बाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं। जो खाने से ही उनका हृदय पिघल जाये। घड़ी2 याद भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं भूलेंगे। क्योंकि तुम अभी 16 कला तो बने नहीं हो। सम्पूर्ण बनना है जरूर। पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा कितना तेज होता है। फिर कम होते2 जाकर लीक रह जाती है। घोरअंधियारा हो गया है। फिर घोर सोझरा होना है। यह विकार आद छोड़ बाप को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण बन जावेगी। तुम्हारी राजधानी स्थापन होती है। तुम चाहते हो सम्पूर्ण महाराजा बनने। परन्तु सभी तो बन न सकें। पुरुषार्थ भी सब को कराना है। बाकी यह तो जानते हैं सभी=सब राजा सभी ल0ना0 तो नहीं बनेंगे। कोई तो कुछ भी पुरु0 नहीं करते। इसलिए महारथी - घोड़ेसवार प्यादे कहा जाता है। महारथी थोड़े होते हैं प्रजा वा लश्कर जितना होता है उतने कमान्डर वा मेजर थोड़ेई होंगे। कैप्टन भी है। प्यादे भी हैं। तुम्हारी सेना है ना। सारा मदार है याद की यात्रा पर। इन से बल मिलता। तुम हो गुप्त वारियर्स। बाप को याद करने से विकर्मों का जो किचड़ा है वह भस्म हो जाता है। बाप कहते हैं धंधा-धोरी भी भस्म करो। बाप को याद करो। तुम जन्म-जन्मा0 के आशुक हो एक माशुक के। वह माशुक मिला है तो उनको याद करना चाहिए ना। आगे भी याद करते थे। परंतु विकर्म थोड़ेई विनाश होते थे। जानते ही नहीं थे। बाबा को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बाबा ने बताया है तुमको यहां तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। आत्मा को ही बनना है। आत्मा ही मेहनत कर रही है। यह है तुम्हारी अन्तिम जन्म जिसमें जन्म-जन्मा0 के मैल को उतारना है। यह है ही मृत्युलोक का अन्तिम जन्म। फिर जाना है अमरलोक। आत्मा पावन बनने बिगर जा नहीं सकती। हिसाब-किताब सब चुकुत होना है। सजा खावेंगे तो पूरा कब। सजा नहीं खाने वाले आठ माला के दाने कहे जाते हैं। 9 रत्न की ही मंडी आद हर चीज बनाते हैं।

ऐसा बनना है तो बाप को याद करने की मेहनत करनी है। बाप कहते स्वर्ग में तो सभी जावेंगे। प्रजा तो ढेर के ढेर होती है ना। पुरुषार्थ करना है ऊंच पद पाने का। तो फिर कल्प-कल्पान्तर, जन्म-जन्मान्तर पाते रहेंगे। बाप तो हरेक की अवस्था से समझ सकते हैं। यह इतना चढ़ सकेंगे या नहीं। बाबा जानते हैं कई बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, अनुभव अच्छा सुनाते हैं। बाप कहते हैं सर्विस का सबूत दो। किसको समझाया। कोई आशुक हुआ? लिखते हैं फलाना रोज आते थे अभी आते नहीं हैं तो बात ही खलास। बाप को क्या बैठ लिखें। बाप को समाचार भी युक्ति-युक्त सच्चा देना चाहिए। महिमा तो लिखें। फिर नहीं आता तो क्या लिखे। बाबाको शक पड़ेगा कोई ऐसी संशय की बात सामने आई जो टूटपड़ा। समाचार से यह बाबा, शिव बाबा भी जानते हैं यह बच्चा बहुत अच्छा सर्विस करते हैं। जैसे जगदीश है, रमेश है, चिरंजीवी लाल (ग्वालियर का) है बहुत अच्छी सर्विस करते हैं नशा चढ़ा हुआ है। जब अनुभव सुनाते हैं उन सभी तुम समझ जावेंगे इनका अनुभव बहुत अच्छा है। इनका वाजिब (साधारण) है। मालूम पड़ता है ज्ञान तो मिला परन्तु नशा कितना चढ़ा हुआ है। कितने को हमने ज्ञान दिया। लिखते हैं आज फलाना मिनिस्टर आया। बहुत अच्छा समझा। बाबा कहते हैं उस समय समझा। बाहर निकला और खलास हो जाता। माया एकदम क्या हाल कर देती है। बाबा को बहुत आकर कहते हैं बाबा हमने अच्छी रीत समझ लिया अभी हम यह काम-काज उतार कर आवेंगे। बाबाकह देते हैं माया ऐसी है जो तुम फिर आवेंगे हो नहीं। माया हप कर देता है। फिर वह नशा हो खलास हो जाता है। लिखकर देते हैं बहुत अच्छा ज्ञान है। अच्छी उन्नति हो सकती है। परन्तु खुद गुम। तो दूसरे फिर कैसे आवेंगे। खुद जाकर दूसरे को सुनावे तो तब तो आवे। इसलिए टाईम लग जाता है। वहभी नथींग न्यु। जो कुछ होता है कल्प पहले मिसल चलता रहता है। ड्रामा अनुसार ब्रह्माणों का कुल वृधिको पाता रहता है। समझा जाता है इतने ढेर बच्चे आते हैं बाप से मिलने उन्हों के रहने लिए मकान आद भी इतना बड़ा चाहिए। बाप कहते हैं मैं इस रथ पर आता हूं। उन्हों ने फिर घोड़े-गाड़ी बैठ दिखाई है। बाकी लड़ाई आद की बात ही नहीं। बाकी यह तो जानते हो पुरानी दुनिया का विनाश होगा फिर वहां सभी कुछ नया मिलेगा। फर्स्ट आद सभी नया होगा। हर चीज़ फर्स्ट, खान-पान सभी कुछ नया। तुम भी नये होंगे। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। यह ल०ना० ने राज्य कैसे और किससे लिया किसको भी पता नहीं। तुम अभी जानते हो बाप ने पढ़ाया है। और कोई की ताकत नहीं। यह जब सतयुग के मालिक थे तो और कोई धर्म नहीं था। भारत में एक ही डिटी डिनायस्टी का राज्य था। यह बातें सिवाय बाप के कोई समझा न सके। उन्हों ने राज्य कैसे पाया और फिर कैसे गंवाया यह बाप के सिवाय दुनिया में कोई भी नहीं जानते। तुम बतावेंगे तो मनुष्य जरूर बन्दर खावेंगे। और तो कोई बता न सके। 84 के चक्र का राज़ तुम समझाते हो। सतयुग को कहा है शिवालय। पवित्र दुनिया। कलियुग को कहा जाता है वेश्यालय नर्क। अपवित्र दुनिया। यह भी नहीं समझते हो तो जंगली जनावर कहेंगे ना। इसलिए ही बाबा ने पर्चे निकलवाई थी। सतयुगी रहवासी हो या कलियुगी नर्कवासी हो? तो शर्म आवेगा। नर्कवासी तो सभी हैं। अभी तुम बच्चे संगमयुगी वासी हो। तुम जानते हो हम स्वर्ग वासी बन रहे हैं। तुम बच्चों को संग भी ऐसा करना चाहिए। संग तारे कुसंग बोरे। ऐसे भीबहुत हैं जो औरों को बचाते, खुद डूब पड़ते हैं भक्ति मार्ग के दूषण में। दूसरे को निकालते खुद ही नाम-रूप में फंसगटर में गिर पड़ते हैं। इसलिए बाबा खबरदार करते हैं। कहांनाम रूप में नहीं फंस मरना। बाबा जानते हैं अच्छे2 भी नामरूप में फंस पड़ते हैं। बाकसंग हैना। माया जोर से ऐसा थप्पर लगाती हैजो फंस कर देती। बाबा नामनहीं ले सकते। फिर बहुत पछतावेंगे कि यह क्या किया। जो महसुस करते हैं वह फिर लिखते हैं अब बाबा हम कहां जावेंगे। रहम करो। और तो कोई जगह है नहीं। माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम चुहड़ा मेहतर भंगी बना देती है। यह है ही मेहतरों का राज्य। इसलिए बाप कहते हैं अमृत छोड़ विष क्यों खाते हो। विष को भार भी कहते हैं। फिर यह ल०ना० को सतयुग में बच्चे नहीं होते। नहीं तो दुनिया कैसे चलेगी। अभीऐसे पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाता हूं। अच्छा गुडमार्निंग।